Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-04 No.02 April 2022

विद्यालयी वातावरण एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

डॉ0 राजकुमारी सिंह शोध निर्देशिका विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग आई0एफ0टी0एम0 यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद
शिखा उपाध्याय शोधकर्ती आई0एफ0टी0एम0 यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद

व्यक्ति प्रकृति से सामाजिक होता है उसका सम्पूर्ण जीवन समाज की क्रियाकलापों से संचालित व प्रभावित होता है। वह लिखना, पढ़नाए बोलना–चालना आदि क्रियायें समाज में रहकर ही सीखता है। व्यक्ति अपने वंशानुक्रम और पर्यावरण जिसमें वह रहता है दोनों के मिश्रण की उपज है। व्यक्ति हमेशा एक सामाजिक वातावरण से घिरा रहता है जो न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है बल्कि उसके सोचने समझने की क्षमता को भी प्रभावित करता है क्योंकि समाज एक ऐसा परिवेश है जिसमें व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत स्वच्छन्दता का त्याग करना पड़ता है। समाज व्यक्तियों का समूह है जिसकी रचना व्यक्तियों ने अपने हित के लिये की है। जॉनडीवी के अनुसार, "विद्यालय समाज का लघु रूप है।".

विद्यालय में भिन्न–भिन्न जाति, वेश, सम्प्रदाय, समुदाय के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। इसी कारण प्रत्येक विद्यार्थी अपनी जाति, वंश, सम्प्रदाय, समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है जिसके फलस्वरूप विद्यालये अपने आप में एक समाज का निर्माण करता है। शिक्षा को ही मानव जीवन का आधार माना जाता है क्योंकि शिक्षा से रचनात्मक शकित का संचार होता है। शिक्षा की सहायता से ही एक विद्यार्थी अपने वातावरण से अनुकूलन करने के साथ–साथ उस पर विजय भी प्राप्त कर लेता है।

विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में यदि दृष्टि डाली जाये तो पता चलता है कि प्राचीन काल में गुरूकुल व्यवस्था थी तब विद्यालयी वातावरण सम्पूर्णतः अध्यात्मिक हेाता था जो कि गुरू के व्यवहार व दिनचर्या के अनुसार ही चलता था। आज के आधुनिक युग में परिस्थितियाँ बिल्कुल भिन्न हैं, इस भौतिकतापूर्ण युग में सभी उद्देश्य धन/पूँजी पर आकर केन्द्रित हो जा रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा व विद्यालय दोनों ही के गुणात्मक चरित्र में गिरावट आई है। धन केन्द्रित सोच के कारण समाज में विद्यालय के लिये धारणा भी डिग्री लेने वाले इमारतों से हो गई है लिहाजा विद्यालयी वातावरण भी इससे अछूता नहीं रहा है।

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के अनुसार, "विद्यालय में व्यतीत किया गया समय बालक का सर्वोत्तम समय होता है अतः विद्यालय का वातावरण ऐसा हो जो ऐसे शैक्षिक तंत्र का विकास कर सके जिससे मूल्य आधारित व लक्ष्य केन्द्रित शिक्षा दी जा सके।" किसी भी विद्यालय का विद्यालयी वातावरण प्रकट करत है कि उसके विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि किस प्रकार की है। चाहे उसमें माता–पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्तर, पास–पड़ोस, मनोबल, शारीरिक स्वास्थ्य सभी कारक निर्भर करते हैं। इन सभी कारकों के अतिरिक्त विद्यालय में शिक्षा देने वाले शिक्षक, अन्य कर्मचारी, प्रधानाचार्य, सभी के व्यवहार का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार पर पड़ता है।

<u>सामाजिक–आर्थिक स्तर–</u> सामाजिक–आर्थिक स्तर में हम पास–पड़ोस, मित्र, परिवार, सभी को सम्मिलित कर सकते हैं। साथ ही इनके द्वारा अर्जित पूँजी से इनके आर्थिक स्तर का आँकलन कर सकते हैं वैसे तो विद्यालयी वातावरण शिक्षक व विद्यार्थी द्वारा ही निर्मित होता है लेकिन इसके निर्माण में अन्य कारक भी जिम्मेदार होते हैं। जैसे–

1. परिवार में माता–पिता की शिक्षा कितनी है।
2. उच्च शिक्षा प्राप्त माता–पिता का दृष्टिकोण शिक्षा के लिये उदार होता है।
3. माता–पिता का कार्य क्षेत्र उच्च स्तर है या निम्न स्तर का।
4. आस–पड़ोस में किस प्रकार की जीवन शैली जीने वाले लोग रहते हैं।
5. आस–पड़ोस सरकारी सेवा में या गैर सरकारी सेवा में है।
6. माता–पिता के कार्य करने के घण्टे पर भी बालक की शैक्षिक उपलब्धि निर्भर करती है।
7. माता–पिता या भाई–बहन के बीच संवाद का समय कितना है। परिवार में संवाद रहने से बालक को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।
8. माता–पिता/परिवार में खान–पान की शैली कैसी है। निम्न आर्थिक स्तर के परिवारों में खाने–पीने की सुविधाओ की कमी होती है जिससे बालक का स्वास्थ्य गिरा रहता है। जिसका कि कुप्रभाव विद्यार्थी/बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।
9. माता–पिता का निम्न आर्थिक स्तर होने के कारण सुविधाओं का अभाव रहता है जिससे विद्यार्थियों में हीन भावना हमेशा बनी रहती है।

Copyright @ 2022 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-04 No.02 April 2022

10. घर, परिवार में बड़े बुजुर्ग के होने से बच्चों में जीवन सम्बन्धित कठिनाईयों का सामना करने की सीख व अनुभव मिलते हैं जिससे बच्चों में नई ऊर्जा का संचार होता है व वे कठिनाईयों का सामना करने के लिये तत्पर रहते हैं।

इन सभी कारकों के साथ विद्यार्थी शिक्षक संबंध कैसा है ये बात भी अपना विशेष महत्व रखती है क्योंकि शिक्षक का कक्षा व विद्यालय में व्यवहार व ज्ञान बालक के मानसिक पटल पर एक गहरी छाप छोड़ता है। बच्चा घर से निकलकर जब विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह केवल अपने शिक्षक को ही अनुसरित करता है। इसके अतिरिक्त विद्यालय प्राचार्य का अनुशासन, व्यक्तित्व भी विद्यार्थी के जीवन में प्रेरणा स्रोत होता है। उपरोक्त बताये गये कारकों की उपस्थिति से ही प्रत्येक विद्यालय का अपना एक वातावरण बनता है और यह वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव डालता है। किसी भी छात्र की शैक्षिक उपलब्धि उसकी उन्नति तथा आगे बढ़ने की प्रक्रिया विद्यालय के वातारण पर निर्भर करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व – सामान्यतः देखा जाता है कि शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं में पाठ्यक्रम सम्बन्धित समस्याओं का प्रत्यक्षीकरण कम होता है जबकि शैक्षिक वातावरण, शिक्षकों की कार्यशैली, दृष्टिकोण तथा प्रशासन में सुधार की है। अब प्रश्न उठता है कि वातावरण संबंधित सुधार को नियमों एवं विधियों में नहीं बांधा जा सकता क्योंकि इसमें तो विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी, सुविधायें, प्रशासन सभी शामिल हो जाते हैं और मुख्य बात तो यह है कि यह अधिकतर विद्यालयी पद्धति के ऊपर निर्भर करता है। विद्यालय में होने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यकलाप, अध्यापक और प्रधानाचार्य के बीच, अध्यापक एवं छात्रों के बीच कार्यकलाप विद्यालयी वातावरण निश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और यही वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके व्यवहार को निर्धारित करने में प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। विद्यालयी वातावरण विद्यालय में शैक्षिक तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं में संगठन की उपलब्धि को सुनिश्चित करता है और इस सिद्धान्त पर बल देता है कि व्यक्ति का व्यवहार, व्यक्तित्व और वातावरण का प्रमुख लक्षण है।

किसी भी विद्यालय में अध्यापक का शिक्षण कौशल एवं विद्यार्थियों की सीखने की सम्पूर्ण कला तथा उनके आपसी मधुर सम्बन्धों को प्रभावति करती है।इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण बालक के चारों तरफ के वातावरण को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थी का स्वस्थ विकास तथा उन्नति विद्यालय को अपने लख्य की ओर प्रेरित करने में तथा उनके चारित्रिक विकास में सहायता करने में विद्यालय का संगठन और उसका वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इन सभी के अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों को सोचने व समझने की वह शक्ति प्रदान करता है जिससे वे भविष्य में अपने निर्णयों को स्वयं लेकर अपने कार्यों में सफलता प्राप्त कर सके। इन सभी विचारधाराओं से ही विद्यालय के वातावरण को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने के लिये प्रेरित किया जिनके द्वारा किये गये अध्ययनों ने वातावरण को सुधारने में सहायता की है। इसका अध्ययन सामाजिक व शैक्षिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है विद्यालय के वातावरण को निर्धारित करने में सांस्कृतिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत के परिप्रेक्ष्य में यह कारक और भी प्रभावशाली हो जाता है क्योंकि भारत में अलग–अलग प्रान्तों अलग–अलग भाषाओं, संस्कृतियों का बोलबाला है जो कि विद्यालय वातावरण को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। भारत में सभी प्रान्तों में राज्य सरकार द्वारा संचालित, केन्द्र सरकार द्वारा संचालित और कुछ सरकारी/गैर सरकारी शिक्षण संस्थान चलाये जाते हैं। जिनका आधार कहीं न कहीं भाषा भी हैं जैसे – प्रान्तीय भाषा, राष्ट्र भाषा (हिन्दी), विदेशी भाषा अंग्रेजी आदि। अलग–अलग भाषाओं के कारण विद्यालयी वातावरण में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य पाया जाता है। और इस वातावरण का विद्यार्थियों पर कुछ प्रभाव पड़ता है या नहीं, यह भी अनुसंधान का एक विषय है। जिस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना है उसी प्रकार पर्यावरण या वातावरण एक शक्तिशाली चर है जो बालक को चारों ओर से घेरे रखता है व अपना प्रभाव बालक के व्यवहार पर समय–समय पर प्रभाव डालता है। एक शक्तिशाली चर होने के कारण पर्यावरण या वातावरण को बालक की शिक्षा का निर्धारण करते समय पूर्णरूप से समझा व निर्धारित किया जाना चाहिये ताकि शैक्षिक ढाँचे में आमूल–चूल परिवर्तन किया जा सके। पर्यावरण या वातावरण को समझ व जानकर ही एक शिक्षक बालक में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन करने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

वातावरण शब्द प्रथम दृष्टि में नया और द्विअर्थी प्रतीत होता है। बहुत से अध्ययनों ने इसके लिये पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों के बीच एक सीमा रेखा है जो इन दोनों शब्दों पर्यावरण और वातावरण को अलग करती है। वातावरण शब्द एक विस्तृत शब्द है जो पर्यावरण शब्द को अपने अन्दर समाहित किया हुये है। मानव सम्बन्धी तत्व जो विद्यार्थी के चारों तरफ विद्यमान हैं उन तत्वों को पर्यावरण कहते हैं, जबकि विद्यालय में सामाजिक, शारीरिक तथा भावात्मक क्रियाऐं मिलकर विद्यालयी वातावरण का निर्माण करती हैं। इस प्रकार देखा जाये तो वातावरण एक वर्ग है और पर्यावरण इस वर्ग का एक प्रकार है।

विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का आँकलन हमें कुछ पूर्व अनुसंधानों से पता चलता है जैसे–

- **डी0सेल्स (1978)** में कक्षा के वातावरण एवं विद्यार्थियों के विकास के सम्बन्ध को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया। इस अध्ययन से उनको निम्न परिणाम प्राप्त हुये–

Copyright @ 2022 Author